



तितलियों के देश में....!

- पंकज त्रिवेदी

संपादक : विश्वगाथा (त्रैमासिक मुद्रित पत्रिका)

गोकुलपार्क सोसायटी, 80 फ्रीट रोड, सुरेन्द्र नगर,

गुजरात - 363002

इन्सान को जब जीवन जीने की समझ मिलती है तब कच्चे हीरे जैसी होती है। हीरे को तराशने के बाद ही उसके मूल्य की परख हो सकती है। उसे बाज़ार में रखा जाए तब ही जौहरी की नज़र उन पर होती है। समझ पाने के बावजूद इन्सान आखिर बच्चा ही तो होता है न? उसके बचपन से ही उसे तराशने का कार्य शुरू करना चाहिए। फिर देखो, समाज के बाज़ार में उस हीरे का मूल्य अपने आप बढ़ने लगेगा। बच्चे में जो शक्ति पहली नज़र में ही दिखती है वह आखरी नहीं होती। जो नहीं दिखती उसका शून्यावकाश भी तो नहीं होता! इस बात को स्पष्ट रूप से समझने में हमारी ग़लती हो सकती है, उस बात को कैसे नकार सकेंगे? कभी-कभी बच्चे की बाह्य-भीतरी शक्ति के आसपास ही हम होते हैं। जो हमारे छीछौलेपन को प्रकट करके दंभ को ललकारता है। किसी व्यक्ति के सन्दर्भ में हम विविध प्रकार के अभिप्राय देने का हक़ प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा क्यों?

कई बार इन्सान के भीतर रही शक्ति किसी खास संयोग में प्रकट हो तब उनके कई स्वरूपों की पहचान होती है। कभी वह पारिजात के पुष्प पर पड़े ओस बूंद जैसा लगे, तो कभी मासूम बेटे की स्वप्नभरी आँखों के पतंगे जैसा लगे और कभी तो किसी युवती के हृदय में टहुकते मोर जैसे प्रियतम को मिलाने की बेसब्री जैसा लगे।

जिस इन्सान को अपने जीवन के सन्दर्भ में जागरूकता ही न हो, वह इन्सान विचार से भी अपनी कल्पना के मनोहर चित्र का स्केच कैसे बना पाएगा? आखिर उनकी जीवनरेखा का चेहरा सुन्दर नहीं बन पाता। समाज मिलने पर उसे तराशा जाए तो उसकी कल्पना के सौन्दर्य में बड़ा ही निखार आता है।

जॉर्ज बर्नाड शो कहते हैं; "मैं नर्क पसंद करूँगा, मगर नंबर एक बनाना चाहता हूँ। स्वर्ग में नंबर दो बनने की मेरी इच्छा नहीं है। क्यूँ खड़े हो लाइन में - ऐसा तो कभी नहीं। नर्क भले ही मगर नंबर तो एक ही!" बर्नाड शॉ ने अपने जीवन सन्दर्भ में जो स्केच बनाया था, उसका चेहरा अदभुत था। ऐसा हम इसलिए कह सकते हैं कि उनके मन में स्पष्ट विचार था कि मुझे क्या करना है और कैसे जीना है? कुदरती आपत्तियों के बीच भी दृढ़ मनोबल हो तो मार्ग से भटकने का भय नहीं रहता।



ध्येय को प्राप्त करने में समय लगे या सत्य को बाहर लाने में अपने आप को तपिश के हवाले भी करना पड़े। ऐसे समय में दोस्त भी दुश्मन बन जाए और अनजान लोग उन्हें साथ देकर अपने अभिमान, पद और धन से रौब जमाये। ऐसे समय में मुश्किलों को भी हमारी हिम्मत पे दोस्ती करने की इच्छा हो! ऐसी हिम्मत जब भीतर से प्रकट हो जाए तब मान लो कि हमारे सर पर सत्य का छात्र है।

समझ का प्रकाश बढ़ता जाएगा तो वृद्धि भी होगी और अपने आपको समझने की सरलता भी होगी। बाह्य वृद्धि के साथ-साथ आंतरिक वृद्धि भी अनिवार्य है। बाह्य वृद्धि कुछ सालों के बाद रुक जाएगी, मगर आंतरिक वृद्धि तो अविरत चलती रहती है। उसके लिए हमारी तैयारी जितनी अटल होगी उतनी ही सरलता बनाती रहेगी।

इन्सान को जीवन के प्रति चाहत हो तो ध्येय तय कर पाएगा। जो सचमुच जीवन को चाहता है, वह किसी पल को नष्ट नहीं होने देता। प्रतिपल वह अपने जीवन को प्रकाशमय बनाने की कोशिश में लगा रहता है। उसकी मेहनत जब सफलता को अर्जित करती है तब जाने-अनजाने में वह आसपास ले लोगों के जीवन पर गहरी छाप छोड़ जाता है। ऐसी मेहनत करने के लिए इन्सान को आत्मश्रद्धा की दीप जलाना चाहिए। साथ ही उस में ताकत का घी को भी होमना चाहिए। जहाँ शुद्ध मन, सच्ची समझ, आत्मश्रद्धा और अपनी निजी हिम्मत का समन्वय हो वही इन्सान कोहीनूर की तरह चमकने लगता है। हमें तो सिर्फ उसी दिशा में निष्ठा, समझदारी और दृढ़ निर्धार से कदम ही उठाना है।